मुख्य बिंदु

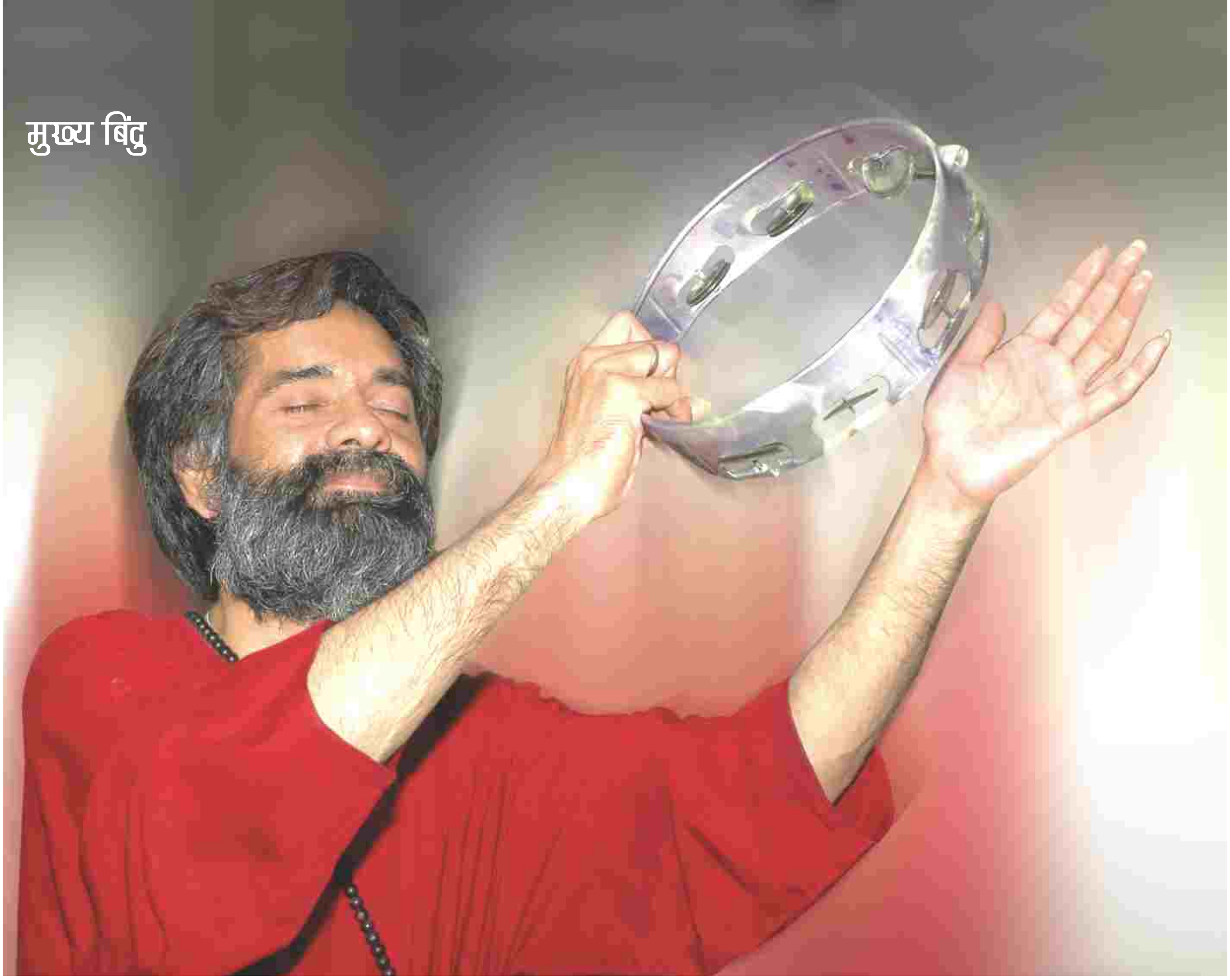

झुकने की कला

कीर्तन का रहस्य

एक मित्र ने पूछा है कि गीता के संबंध में उन्हें कुछ भी नहीं पूछना। लेकिन यहां जो कीर्तन होता है, उस संबंध में उन्हें बड़ी अड़चन है! गीता के संबंध में उन्हें नहीं पूछना है, क्योंकि गीता वे समझ चुके होंगे! यहां किस लिए आते हैं, पता नहीं। यहां आने का कोई प्रयोजन नहीं है। गीता समझ ही गए हों, तो यहां आने का क्या प्रयोजन है! चढ़ जाएं किसी मंदिर पर और चिल्ला दें कि आ जाओ, जिनको पाना हो। मुझे मिल गया! कीर्तन के संबंध में उन्हें अड़चन है।

किया है कभी कीर्तन? अगर किया है, तो अड़चन नहीं हो सकती। और नहीं किया है, तो सवाल नहीं उठाना चाहिए। जो नहीं किया है, उसके बाबत नहीं पूछना चाहिए। अड़चन यही होगी कि यह क्या है कि लोग नाचने लगते हैं, होश खो देते हैं! अड़चन यही है कि स्त्री-पुरुष साथ-साथ नाच रहे हैं।

अगर इतनी भी बेहोशी न हो कि स्त्री-पुरुष भी न भूलें, तो क्या खाक कुछ भूलेगा! यह भी होश बना रहा कि मैं पुरुष हूं, वह पास में खड़ी स्त्री है, आप कीर्तन कर रहे हैं? इतना भी होश न भूलें, तो क्या खाक कीर्तन होगा?

कीर्तन तो पागलों का रास्ता है, वे जो भूलने को तैयार हैं बाहर को। फिर क्या होता है, इसे करने का थोड़े ही सवाल है। कीर्तन कुछ किया थोड़े ही जाता है। कीर्तन तो अपने को धारा में छोड़ना है, फिर जो हो जाए। पर देखने वाले को अड़चन होगी, देखने वाले को सदा ही अड़चन होगी। क्योंकि देखने

वाला बाहर खड़ा है। करके देखें। थोड़ी देर के लिए होश खोकर देखें। थोड़ी देर के लिए एक दूसरे जगत में प्रवेश करें; और एक दूसरा होश उपलब्ध करें। थोड़ी देर को बह जाएं बाहर से और भीतर हो जाएं। और होने दें, जो हो रहा है; छोड़ दें परमात्मा में। पूरे चौबीस घंटे छोड़ना शायद मुश्किल होगा। क्योंकि आपको खयाल है, दुकान आप चलाते हैं। आपको खयाल है, आप नहीं होंगे, तो संसार का क्या होगा! आपके बिना

कीर्तन सिर्फ एक व्यवस्था है, जिससे थोड़ी देर को हम छोड़ देते हैं। हम अपने को नहीं चलाते, हम सिर्फ छोड़ देते हैं; एक लेट गो। अपने को ढीला छोड़ देते हैं धुन के ऊपर। और धीरे-धीरे भीतर जहां ले जाना चाहता है, ले जाने लगता है। फिर पैर थिरकने लगते हैं।

कुछ चलेगा नहीं! शायद पूरे समय छोड़ना मुश्किल हो, घड़ी, आधा घड़ी को..।

कीर्तन सिर्फ एक व्यवस्था है, जिससे थोड़ी देर को हम छोड़ देते हैं। हम अपने को नहीं चलाते, हम सिर्फ छोड़ देते हैं; एक लेट गो। अपने को ढीला छोड़ देते हैं धुन के ऊपर। और धीरे-धीरे भीतर जहां ले जाना चाहता है, ले जाने हैं। किसी दूसरे लोक में प्रवेश हो जाता है। फिर लगता है। फिर पैर थिरकने लगते हैं। हाथ-पैर मुद्राएं बनाने लगते हैं। आंखें बंद हो जाती हैं। किसी दूसरे लोक में प्रवेश हो जाता है। फिर फिक्र छोड़ें कि कौन बाहर खड़ा है। उसकी थोड़ी ही फिक्र करनी है। उसकी फिक्र करिएगा, तो भीतर नहीं जा सकते।

कीर्तन की कला खो गई, क्योंकि हम अति बुद्धिमान हो गए हैं। यह बुद्धिमानों का काम नहीं है। जिन मित्र ने पूछा है, बुद्धिमान आदमी हैं। यह बुद्धिमानों का काम नहीं है। इसलिए वे कहते हैं, गीता के संबंध में कुछ नहीं पूछना है। क्योंकि गीता तो बुद्धिमानी खुद ही समझ लेगी। कीर्तन से अड़चन है।

यह बुद्धिमानों का काम नहीं है। बुद्धिमानी का काम संसार है। यहां तो बुद्धि छोड़कर, बुद्धि फेंककर कोई प्रवेश करता है। और यह जो मैं इतनी बातें आपसे बुद्धि की कर रहा हूं, सिर्फ इसी आशा में कि किसी दिन आप ऊब जाएंगे इस बुद्धि से। इसे छोड़कर, उतारकर, बाहर इसके निकलने की कोशिश करेंगे।

अगर बुद्धिमानी से इतनी बात भी समझ में आ जाए कि बुद्धि काफी नहीं है, तो बस, बुद्धि का काम पूरा हो गया। अगर बुद्धिमानी इतना समझा दे कि इसको छोड़कर पार जाना है, कहीं दूर, इससे हटना है, इसके बंधन और सीमाओं के पार, तो बुद्धिमानी का काम पूरा हो गया। बुद्धिमान आदमी हम उसको कहते हैं, जो बुद्धिमानी को छोड़ने की क्षमता रखता है।

यह कीर्तन तो बुद्धि को छोड़ने की बात है।

वह अर्जुन कह रहा है कि आज मैं समझ पाता हूं कि आपके प्रभाव से, आपके प्रभाव के कीर्तन से जगत हर्षित होता है, अनुराग से भर जाता है। पर कोई हैं, जो घबड़ाते हैं, भागते हैं, भयभीत होते हैं। और देखता हूं कि सिद्धों के समुदाय भी कंपित आपको नमस्कार कर रहे हैं!

हे महात्मन्! ब्रह्मा के भी आदि कर्ता और सबसे बड़े आपके लिए वे कैसे नमस्कार न करें! क्योंकि हे अनंत, हे देवेश, हे जगन्निवास, जो सत, असत और उनसे परे अक्षर अर्थात सच्चिदानंदघन ब्रह्म है, वह आप ही हैं।

और हे प्रभु, आप आदि देव और सनातन पुरुष हैं, और आप इस जगत के परम आश्रय और जानने वाले तथा जानने योग्य और परम धाम हैं। हे अनंत रूप, आपसे यह सब जगत व्याप्त और परिपूर्ण है। और आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चंद्रमा तथा प्रजा के स्वामी ब्रह्मा, ब्रह्मा के भी पिता हैं। आपके लिए हजारों बार, हजारों बार नमस्कार। आपके लिए बार-बार नमस्कार।

और हे अनंत सामर्थ्य वाले, आपके लिए आगे से, पीछे से, सब तरफ से नमस्कार। हे सर्वात्मन्! आपके लिए सब ओर से नमस्कार होवे। क्योंकि अनंत पराक्रमशाली, आप, संसार को व्याप्त किए हुए हैं, इससे आप ही सर्वरूप हैं।

ये सारे वचन परमात्मा के प्रति एक धन्यभाव के वचन हैं, एक अहोभाव के।

अर्जुन भयभीत हुआ है, लेकिन धन्यभागी भी हुआ है। यह अनूठा, अद्वितीय अवसर उसे मिला है कि एक झलक उसे मिली है विराट में, जहां सब सीमाएं टूट जाती हैं। जहां जानने वाला और जाना जाने वाला एक हो जाते हैं। और जहां सृष्टि और सृष्टि का निर्माता, वे भी पीछे छूट जाते हैं। और मूल आश्रय और परमधाम का अनुभव होता है।

वह धन्यभागी हुआ है। वह अपने धन्यभाग को प्रकट कर रहा है। उसकी वाणी बड़ी अजीब-सी लगेगी। वह कहता है, नमस्कार, बार-बार नमस्कार, हजार बार नमस्कार। आगे से नमस्कार, पीछे से नमस्कार। लगेगा, क्या कह रहा है यह! नमस्कार तो एक दफा कहने से भी काम चल जाएगा। लेकिन उसका मन नहीं भरता है। वह सब तरफ से नमस्कार कर रहा है, फिर भी उसे लगता है कि जो मुझे मिला है, उसका अनुग्रह मैं मान भी न पाऊंगा। उससे उऋण होने की तो कोई व्यवस्था नहीं है, उसका अनुग्रह भी न मान पाऊंगा।

कहा जाता है, कठिन है पिता के ऋण से मुक्त होना, कठिन है मां के ऋण से मुक्त होना। लेकिन असंभव नहीं। गुरु के ऋण से मुक्त होना असंभव है। और गुरु के ऋण से मुक्त होने का कोई उपाय नहीं है। क्योंकि जो अनुभव गुरु के

माध्यम से उपलब्ध होता है, यह जो कृष्ण के माध्यम से अर्जुन को हुआ, अब इस अनुभव के लिए कोई भी तो मूल्य नहीं चुकाया जा सकता। कुछ भी नहीं दिया जा सकता। सच तो यह है कि देने वाला भी कहां बचा अब? क्या दे? अब जो भी दे, सब छोटा है, व्यर्थ है। सिर्फ नमस्कार रह जाता है, सिर्फ नमन रह जाता है।

गुरु का हमने जो इतना आदर किया है, वह किसी और कारण से नहीं। क्योंकि कुछ और करने का उपाय ही नहीं है। उसे हम कुछ दे भी नहीं सकते। कुछ दें, तो व्यर्थ है। जो हम देंगे, वह संसार का कुछ हिस्सा होगा। और वह हमें संसार के पार ले गया। उस संसार के पार ले जाने वाले अनुभव के लिए संसार का कुछ भी दें, पूरा संसार भी दें, तो बेमानी है। अब हम क्या कर सकते हैं? सिर्फ एक अनुग्रह का भाव रह जाता है।

इसलिए अर्जुन कह रहा है, नमस्कार, नमस्कार, हजार बार नमस्कार! कई बहाने खोज रहा है कि आप देवों के देव, आप परमात्मा, आप ब्रह्मा के भी पिता!

वह कुछ भी कह रहा है। वह बच्चों जैसी बात है। वह जो कुछ भी कह रहा है, एक ही बात है। वह हर तरफ से कोशिश कर रहा है कि आपको मैं नमस्कार कर सकूं।

उस विराट के सामने हमारे पास नमन के सिवाय और कुछ भी नहीं है, झुक जाने के सिवाय और कुछ भी नहीं है।

एक बहुत मजे की बात है कि सिर्फ भारत अकेला मुल्क है, जहां गुरु के चरणों में झुकने की लंबी धारा है। और अगर कहीं भी यह बात गई है, तो वह भारत से गई है। दुनिया में कहीं भी गुरु के चरणों में सिर रखकर अपने को सब भांति समर्पित करने की कोई धारणा नहीं है।

इसलिए पश्चिम से जब लोग आते हैं, तो उन्हें जो सबसे मुश्किल बात खटकती है, वह गुरु के प्रति इतनी अनन्य श्रद्धा खटकती है। इतनी श्रद्धा उनको अंधापन मालूम पड़ती है। और उनका मालूम पड़ना ठीक ही है। क्योंकि किसी के चरणों में सिर रखना, और किसी के प्रति इस तरह सब समर्पित कर देना, अजीब-सा मालूम

कहा जाता है, कठिन है पिता के ऋण से मुक्त होना, कठिन है मां के ऋण से मुक्त होना। लेकिन असंभव नहीं। गुरु के ऋण से मुक्त होना असंभव है। और गुरु के ऋण से मुक्त होने का कोई उपाय नहीं है।

पड़ता है। और लगता है, यह तो एक तरह की मानव-प्रतिष्ठा हो गई! यह तो मनुष्य की पूजा हो गई! और उनका लगना ठीक है, क्योंकि उन्हें जो दिखाई पड़ रहा है, वह मनुष्य ही है।

लेकिन अगर किसी शिष्य को विराट की थोड़ी-सी भी किरण मिली हो किसी के द्वारा, तो अब वह क्या करे? वह कहां जाए? वह कैसे अपने भार को हल्का करे?

उसके पास एक ही उपाय है कि वह सब तरफ से झुक जाए। और यह झुकना बड़ा अदभुत है। यह झुकना दोहरे अर्थों में अदभुत है। जो मिला है, उसका अनुग्रह इससे प्रकट होता है। और इस झुकने में और मिलने की संभावना सघन हो जाती है। जो बिलकुल झुकना जानता है, उसे सब मिल जाएगा। यह सवाल नहीं है कि वह कहां झुकता है। झुकने की कला जिसे आती है!

हम तो, कई लोग ऐसे हैं, जो नदी में खड़े हैं, पैर पानी में डूबे हैं, लेकिन झुक नहीं सकते, क इसलिए प्यासे मर रहे हैं। क्योंकि झुकें, चुल्लू बनाएं, पानी को भरें, तब प्यास बुझ सके। खड़े हैं नदी में, लेकिन अकड़े हैं। झुक नहीं सकते। वह घड़ा भी, जो पानी में जाए, न झुके, आड़ा न हो, तो भर नहीं सकता; अकड़ा रहे। हम नदी में खड़े हैं, परमात्मा चारों तरफ बह रहा है, मगर झुक नहीं सकते। कैसे झुकें! वह जो झुकने का डर है, वह हमें अटका देता है।

धर्म की खोज झुकने की कला है। और जो झुककर चुल्लू भर लेता है, फिर उसे पता चल गया रहस्य। फिर तो वह पूरा झुककर पानी में डुबकी भी मार ले सकता है। फिर तो वह जानता है कि अगर सिर को मैं बिलकुल झुका दूं और पानी के नीचे ले जाऊं, तो मैं पूरा ही नहा जाऊंगा।

अर्जुन कह रहा है कि जो मैंने जाना, जाना कि तुम्हीं हो सब कुछ।

इसलिए गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्या-क्या नहीं कहते रहे हैं! जिन्होंने कहा होगा, हमें लगता है, कैसे लोग रहे होंगे! लेकिन जिन्होंने कहा है, उन्होंने किसी कारण से कहा है। अगर हम बिना कारण के कह रहे हैं, तो जरूर हमें अजीब-सी बात लगती है कि गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु, गुरु ही सब कुछ!

यही अर्जुन कह रहा है कि तुम्हीं सब कुछ हो, परात्पर, ब्रह्म तुम्हीं हो।

उसने देखा। गुरु झरोखा बन गया। उसके द्वार से उसने पहली दफा झांका। सारी सीमाएं हट गईं; अनंत सामने आ गया। उस अनंत की छाया उस पर पड़ी। पहली दफा जो स्वप्न था, वह टूटा और सत्य उद्घाटित हुआ है। उसका अनुग्रह स्वाभाविक है।

— ओशो

गीता-दर्शन, पांचवां भाग

ग्यारहवां अध्याय, आठवां प्रवचन

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)